

अंतरिक्ष

पृथ्वी की उत्पत्ती के विषय में वैज्ञानिक विभिन्न मतों का उपयोग करते हैं। विभिन्न तरीकों से वे बताते हैं कि पहले क्या हुआ था और बाद में क्या हुआ था। जैसे पृथ्वी पहले आगे के गोले जैसी थी कालांतर में ये ठंडी हुई और धीरे धीरे इसमें से भाप के बादल बने जिससे बहुत वर्षों तक बारिश होतीरही और इस तरह समुन्द्र बन गये और फिर जीवन बैक्टेरिया और जीवाश्म के रूप में पानी में पनपा।

बहरहाल ये तो हुई वो बातें जिससे ये पता चला कि जीवन कैसे पनपा परन्तु पृथ्वी की भी उत्पत्ती से पहले सूर्य का जन्म हुआ था। सूर्य के जन्म से पहले आणविक बादल हुआ करते थे। जोकि ब्रामाण्ड में बहुतायात में पाया जाने वाला सर्वाधिक साधारण पदार्थ है। जैसे पृथ्वी पर पाये जाने वाले धूल मिट्टी ईत्यादि बहुतायात में पाया जाने वाला पदार्थ है वैसे ही ये आणविक बादल ब्रह्माण्ड की धूल हैं अथवा कहें कि मिट्टी हैं। ये ब्रह्माण्ड में यहां वहां फैले होते हैं। अब ब्रह्माण्ड की शक्ति से किसे इन्कार होगा और हम जानते हैं कि ब्रह्माण्ड की शक्ति और सीमा अनंत है। क्योंकि ये ब्रह्माण्ड के बनने के बाद बचा हुआ मलवा है इसलिये ये बहुत शक्तिशाली होता है।

इन आणविक बादलों में हाईड्रोजन के अणु निरंतर सक्रिय रहते हैं और निरंतर केन्द्र की तरफ सरकते रहते हैं। केन्द्र का गुरुत्वाकर्षण बल इन्हे अपनी तरफ खींचता है जिससे ये निरंतर केन्द्र की तरफ सरकते रहते हैं। लाखों करोड़ों किलोमिटर में फैले इन आणविक बादलों में कई स्थान केन्द्रबिन्दु के रूप में प्रकट होते हैं।

केन्द्र के ये बिन्दु हाईड्रोजन के अणुओं की निरंतर सक्रियता से और उनके घनत्व से बनने लगते हैं। जब घनत्व निरंतर बढ़ता हुआ अतिघनत्व का रूप धारण करने लगता है तो ऐसे में ये अणु एक दूसरे से रगड़ खाने लगते हैं और फलस्वरूप गर्मी उत्पन्न होती है और चमक पैदा होती है। यही ये एक सितारे का जन्म होना शुरू होता है। जैसे हमारे सूर्य का जन्म हुआ था। हमारे सूर्य का जन्म भी इसी प्रक्रिया से हुआ है।

केवल अणुओं की रगड़ खाने से अथवा उनके घनत्व के बढ़ जाने से ही सितारे का जन्म होता है, ऐसा नहीं है। इस प्रक्रिया से तो अणुओं की गर्मी बढ़ती है और केन्द्रबिन्दु एक चमकदार स्थान बन जाता है। क्योंकि अंततः ये एक सितारे का रूप ले लेता है इसलिये हम कह सकते हैं कि एक सितारे का जन्म होता है।

दरअसल एक महाविस्फोट से पहले सितारा बन ही नहीं सकता। हाईड्रोजन के अणु जब निरंतर प्रक्रिया करते हुए केन्द्र की तरफ सरकते हैं तो अंततः ये एक दूसरे से मिलने लगते हैं और रगड़ खाते हुए जंहा ये चमक पैदा करते हैं वही इनमें गुरुत्वाकर्षण बल भी बनने लगता है। अब जितने अधिक अणु केन्द्र की तरफ सरकेंगे उतने ही अधिक गुरुत्वाकर्षण बल की उत्पत्ती होगी। इस तरह निरंतर तेज होती प्रक्रिया केन्द्र को बड़ा बनाती जाती है और केन्द्र में चमक बढ़ती जाती है। धीरे धीरे एकबड़ा सा सूर्य प्रकट होने लगता है परन्तु अभी भी आणविक बादल आसपास छाये होते हैं और उसमें से हाईड्रोजन के अणुओं ने निकलकर सूर्य का तो निर्माण कर दिया है परन्तु अभी भी बहुत सारा मलवा इस सूर्य के आसपास होता है और वो भी इस सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उसी के आसपास बना रहता है। बहरहाल एक सौर मंडल बनना अभी बाकि होता है।

आणविक बादलों में से केन्द्रबिन्दु बनना और फिर एक सितारा बनना ईत्यादि प्रक्रिया में लाखों नही करोड़ों वर्ष लग जाते हैं। इन करोड़ों वर्षों में हाईड्रोजन के अणु निरंतर केन्द्र की तरफ सरकते रहते हैं और केन्द्र को शक्तिशाली बनाते रहते हैं। अब इन हाईड्रोजन के अणुओं का स्वरूप बदलने लगता है। निरंतर बढ़ते गुरुत्वाकर्षण बल ने इन्हे अंदर की तरफ तो खींच लिया परन्तु अब एक दूसरे से रगड़ खाते हुए ये फिर बाहर की तरफ निकलने का प्रयत्न करते हैं। इससे केन्द्र में विभिन्न क्रियाएँ होने लगती हैं और फलस्वरूप भंयकर अग्नि की लपटें और गैसें उत्पन्न होने लगती हैं जो गुरुत्वाकर्षण बल से मुक्त होती हैं परन्तु हाईड्रोजन के अणु गुरुत्वाकर्षण से बंधे होते हैं।

केन्द्र में अणुओं का अंदर की तरफ जाना और फिर बाहर की तरफ आना एक क्रिया जैसा बन जाता है फिर अणुओं का यही काम रह जाता है। परन्तु इनकी इस क्रिया से जो भंयकर शक्ति गैसों और अग्नि के रूप में उत्पन्न होने लगती है उसे कहि से निकलने का रास्ता नहीं मिलता है। आणविक बादल ठोस पदार्थ के रूप में इसके आसपास छाये रहते हैं। अब महाविस्फोट की भूमिका बननी आरंभ हो जाती है। आने वाले लाखों करोड़ों वर्षों में ये गैसें और अग्नि अत्यंत प्रचंड रूप में बढ़ जाती है। फिर एक महाविस्फोट होता है और सारे आणविक बादल छिन्न भिन्न होकर बिखर जाते हैं।

अब केन्द्र में बना चमक का गुच्छा रौशन हो उठता है और सूर्य के रूप में स्थापित हो जाता है। उससे निकलने वाली अग्नि और गैसें ब्रामाण्ड में फैलने लगती हैं। इधर ठोस आणविक बादल ब्रामाण्ड में बिखरे होने के बावजूद इस केन्द्र से अथवा सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल से मुक्त नहीं हो पाते हैं और उनका मलवा फिर इस सूर्य के आसपास घूमने लगता है।

आणविक बादल टूट कर बिखर चुके होते हैं और उनमें रहने वाले पदार्थ आपस में मिलने लगते हैं और मिलते हुए सूर्य के आसपास घूमते रहते हैं। जैसे हरे रंग के पदार्थ ने एक जगह जमा होकर गोले के रूप में बुध ग्रह का नाम पा लिया। जैसे तेज चमकदार पदार्थ ने शुक्र ग्रह का रूप ले लिया। जैसे विस्फोट से जलते हुए ठोस पदार्थ ने पृथ्वी का रूप ले लिया। जैसे लाल पदार्थ ने मंगल का रूप ले लिया। जैसे जितना तरल पदार्थ था वो आपस में मिलने लगा और घूमते घूमते गोले के रूप में प्रकट हुआ तो इसका नाम पड़ा बृहस्पती ग्रह और सारी हिलियम गैस ने शनी को प्रकट कर दिया। फिर बाद में युरेनस, प्लूटो और नेपचून जैसे ग्रह भी बन गये और हजारों लाखों छोटी छोटी ग्रहिकाएँ बन गईं और सूर्य के आसपास चक्कर लगाने लगीं। कुछ ग्रहिकाएँ तो उन ग्रहों का चक्कर ही लगाने लगीं जो थी तो उसी ग्रह के अंश ही परन्तु ग्रह बनने के दौरान उसमें मिल नहीं पायी थी।

बहरहाल ग्रह बन गये और केन्द्र अथवा सूर्य के आसपास चक्कर लगाने लगे अर्थात् एक सौर मंडल तैयार हो गया। पृथ्वी की अगर बात करें तो इस महाविस्फोट में पृथ्वी का अपना एक अलग पदार्थ था जो विस्फोट के बाद आपस के आकर्षण से एक दूसरे की तरफ खींचता हुआ जमा होने लगा और धीरे धीरे गोल पृथ्वी का रूप धारण करने लगा। दरअसल विस्फोट के बाद पदार्थ के गुणधर्मों की समानता ने एक दूसरे को अपनी ओर खींचा और इस तरह विभिन्न ग्रह बने। अन्यथा विस्फोट से पहले ये सब साथ साथ थे।

महाविस्फोट में भंयकर अग्नि और गैसों से जलती हुई पृथ्वी को ठंडा होने में ही करोड़ों वर्ष लगे। निरंतर घूमने के कारण इसका अपना एक केन्द्र बनने लगा और महाविस्फोट की आग इसके अंदर समाने लगी जो बाद में असहनीय स्थिती में ज्वालामुखी के रूप में प्रकट हुई। पृथ्वी जब बनी तो उस समय सौर मंडल उथल पुथल से युक्त था। महाविस्फोट के बचा हुआ आणविक बादलों का मलवा विभिन्न ग्रहों और ग्रहिकाओं के रूप में सारे सौर मंडल में बिखरा हुआ इधर उधर भटक सा रहा था। ऐसे कई ग्रह अब नहीं हैं जो उस समय विस्फोट के कारण नये नये बने थे परन्तु कोई परिक्रम पथ ना होने से और सौर मंडल में इधर उधर भटकने से किसी ना किसी ग्रह से टकरा कर समाप्त हो गये। एसी ही कई ग्रहिकाएँ और उल्काएँ आज भी सौर मंडल में भटक रही हैं जो कभी कभी हम टूटे तारे के रूप में देख लेते हैं।

चोंद के बनने की भी एसी ही एक कहानी है। पृथ्वी बन चुकी थी और उसके ठंडी होने की प्रक्रिया चल रही थी। इसकी उपर की परत ठंडी होकर सख्त होने लगी थी और ये पुर्ण रूपेण गोल और अपनी धुरी पर सीधी थी। ऐसे में एक बड़ा भटकता हुआ ग्रह परन्तु पृथ्वी से कुछ छोटा, आकर पृथ्वी से टकरा गया। इस जोरदार टक्कर में उस ग्रह का अस्तित्व ही खतम हो गया अर्थात् वो ग्रह हजारों लाखों टुकड़ों में पृथ्वी की कक्षा में बिखर गया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पृथ्वी भी अपनी धुरी पर कुछ झुक गई और टेढ़ी हो गई। कमाल की बात ये है कि इसी की वजह से आज हम पृथ्वी पर गर्मी, सर्दी और बारिश के विभिन्न मौसम देखते हैं। अगर ये टक्कर नहीं होती तो शायद पृथ्वी पर सदा एक जैसा ही मौसम होता।

जिस ग्रह की पृथ्वी से टक्कर हुई थी उसका मलवा पृथ्वी की कक्षा में बिखर गया था और एक गोल छल्ले के रूप में वो पृथ्वी के आसपास घूमता रहता था। जैसे आज हम शनी के छल्लों को देखते हैं परन्तु शनी के छल्ले विभिन्न ग्रहिकाओं और उल्काओं से बने हैं। इसलिये उनमें समान गुण धर्म नहीं है। परन्तु जो ग्रह पृथ्वी से टकराया था वो एक ही ग्रह का मलवा था और उस मलवे में समान गुणधर्म कार्य कर रहा था। फिर जैसा कि सौर मंडल का रिवाज है। समान गुणधर्म का पदार्थ एकदूसरे के प्रति आकर्षित रहता है। उसी प्रकार उस ग्रह का बिखरा मलवा समान गुणधर्म होने के कारण एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुआ और आपस में मिलकर फिर ग्रह का रूप धारण करने लगा और पृथ्वी के आकर्षण से बंधे होने के कारण गोल होते हुए और घूमते हुए वो पृथ्वी का ही उपग्रह बन गया और कालांतर में हम जिसे चोंद के रूप जानने लगे। एसा नहीं है कि उपग्रह के रूप में चोंद केवल पृथ्वी के पास ही हैं। हमारे सौर मंडल में कई ग्रहों के पास चोंद के रूप में उपग्रह हैं और एक एक नही कई चोंद हैं। शनी के पास वीस के करीब चोंद हैं। गुरु अथवा बृहस्पती के पास तो वीस से भी अधिक चोंद हैं।

बहरहाल सौर मंडल बन चुका था, पृथ्वी बन चुकी थी और चोंद भी बन चुका था। अब जीवन की बारी थी, पृथ्वी पर जीवन कब आया। जब सौर मंडल बन गया और पृथ्वी भी बन गई तो पृथ्वी के ठंडा होने की प्रक्रिया चल रही थी। परत दर परत ये ठंडी हो रही थी। जैसे ज्वालामुखी का लावा ठंडा होता है। लेकिन कहि कहि से आग अथवा गर्मी उबल आती थी। हमारे शास्त्र कहते हैं कि पलक झपकते ही आकाश की उंचाईयों को छुने वाले पहाड़ बन जाते थे और फिर तुरन्त ही गायब भी हो जाते थे। वाराह संहिता में इसका उल्लेख है। हालाकि सौर मंडल बनने का भी हमारे शास्त्रों में उल्लेख है परन्तु वो कुछ जटील भाषा में है अथवा एसा कहें कि जटील शब्दों में है। पदम पुराण में पंच तत्वों की आपसी क्रियाओं का जिक्र है जिससे सौर मंडल का निर्माण हुआ। हजारों वर्ष पहले इसे समझाने

अंतरिक्ष

का शायद यही तरीका रहा होगा। आजके जमाने की वैज्ञानिक धारणाएँ शायद हमें अधिक आकर्षित करती हैं और सटीक मेहसूस होती हैं।

बाहर से भी गर्म और अंदर से भी गर्म उबले हुए आलू की तरह पृथ्वी पर जीवन संभव ही नहीं था जो बाहर से भी गर्म थी और अंदर से भी गर्म थी। जीवन तो बहुत बाद में प्रकट हुआ जब पृथ्वी पर जीवनदायी पानी उत्पन्न हुआ और जब पृथ्वी पर जीवनदायीनी आवसीजन उत्पन्न हुई। अब तक एसा कहा जाता रहा है कि हजारों वर्षों तक गर्म पृथ्वी पर उसकी भाप जमा होती रही जो बाद में बारिश के रूप में पृथ्वी पर गिरी और पानी उत्पन्न हुआ परन्तु अब वैज्ञानिक कहते हैं कि पृथ्वी पर पानी लाने का कार्य धूमकेतुओं ने किया है।

धूमकेतु, जो महाविस्फोट के दौरान बर्फिले पदार्थ के रूप में छिटक कर करोड़ों किलोमीटर दूर जा गिरे और वहां से सूर्य की परिक्रमा करने लगे। फिर यदा कदा विभिन्न ग्रहों से टकराने लगे और वहां पानी उत्पन्न करने लगे। पृथ्वी पर भी ऐसे ही धूमकेतु टकराते रहे और पृथ्वी पर पानी उत्पन्न हुआ। ये शोध अचानक नहीं हुई हैं, दरअसल वैज्ञानिक सौरमंडल के बनने और पृथ्वी पर जीवन के पनपने को लेकर रिसर्च में लगे हैं। उन्हे लगता है कि जब सूर्य में हाईड्रोजन समाप्त होने लगेगी तो सूर्य में फिर विस्फोट होगा और पृथ्वी से जीवन समाप्त हो जायेगा। हालाकि इसमें अभी लाखों वर्ष लगेने वाले हैं। परन्तु जीवन के पनपने और उसके रहस्यों को समझने के प्रयास अभी से जारी हैं।

बहरहाल पृथ्वी पर पानी प्रकट करने में धूमकेतुओं का हाथ रहा है और से महाविस्फोट के दौरान बर्फिले पदार्थ के रूप में अंतरिक्ष में भटक रहे थे और इसी भटकन के दौरान वे पृथ्वी से टकराते रहे और पानी को उत्पन्न करते रहे। बहरहाल पानी के इस बर्फिले रूप के अलावा भी पानी अंतरिक्ष में रहा है और वो हैं छोटी छोटी एसी टंडी उल्काओं के रूप में हैं जो हैं तो पानी परन्तु दिखने में अलग और रंगरूप में अलग परन्तु जब पृथ्वी से टकराती हैं तो आवसीजन से मिलकर क्रिया करती हैं और फिर पानी बनने लगता है। टंडी उल्काओं से पानी आया, बर्फिले धूमकेतुओं से आया अथवा पृथ्वी पर बनी भाप से पानी उत्पन्न हुआ परन्तु पानी पृथ्वी पर प्रकट हुआ। दरअसल करोड़ों वर्षों में हुई क्रियाएँ किसी एक के सिर सेहरा नहीं बंधने देगी, हमे ये मानना पड़ेगा कि इस विषय पर अभी और शोध होनी चाहिये और शोध होगी। इसके लिये हमें भारतीय शास्त्रों की सहायता लेनी होगी अथवा आज नहीं तो कल इस विषय में प्रयास होंगे।

क्योंकि अगर भारतीय शास्त्र कहते हैं कि पंच महातत्वों ने आपसी क्रिया से धातुओं को उत्पन्न किया फिर धातुओं ने आपसी क्रिया से विभिन्न अंगों को उत्पन्न किया है। फिर चाहे वो जीव हो अथवा सृष्टि की कोई भी चीज हो हर जगह हमें पंच तत्व दिखते हैं। तो इसमें वैज्ञानिक केवल अणुओं और परमाणुओं का ही रिसर्च कर रहे हैं। अब अणु और परमाणु तो केवल ठोस दिखने वाला पृथ्वी तत्व हुआ बाकि के तत्वों का क्या होगा? आकाश तत्व केवल शब्द करता है परन्तु दिखता नहीं है, वायु तत्व स्पर्श का अहसास कराता है वो भी दिखता नहीं है। अग्नि तत्व दिखता है परन्तु स्थिर नहीं है और बहुत विध्वंसक है। जल तत्व शीतल है, जीवनदायी है, दिखता है परन्तु निराकार है। पृथ्वी तत्व ठोस, दिखने वाला, आकार युक्त और शांत तत्व है।

इस तरह अगर हमें जीवन और उसकी उत्पत्ती के विषय में समझना है तो हमें भारतीय शास्त्रों और वेदों को समझना होगा। इसलिये कि इससे प्राचीन कोई पुस्तक अथवा ग्रन्थ इस दुनिया में दूसरा नहीं है। जिसमें सृष्टि और ब्रमाण्ड के विषय में बहुत गहरे से बताया गया है।

पृथ्वी पर पानी कहां से आया, इस गुत्थी को सुलझाने के लिये भले ही वैज्ञानिक रिसर्च करते रहे परन्तु सोच और रिसर्च का ये एक छोटा सा मार्ग है। क्योंकि भारतीय शास्त्र कहते हैं कि पानी, जल तत्व के रूप में सदा से मौजूद रहा है। जहां भी पंच तत्व आपस में क्रिया करेंगे तो एक तत्व के रूप में जल सदा ही उनके आसपास होगा।

दरअसल वैज्ञानिक जब विश्लेषण करते हैं तो वो केवल पेड़ की एक शाखा का विश्लेषण कर रहे होते हैं और सोचते हैं कि पेड़ की इस शाखा को समझ लेने से पेड़ की प्रकृति का पता चल जायेगा। हाँ, एसा हो सकता है परन्तु पेड़ की जड़े जिस पृथ्वी में समाई हैं और जहां से पेड़ भोजन प्राप्त कर रहा है उसे कौन समझेगा? अगर उसे नहीं समझा गया तो इस तरह विश्लेषण तो अधूरा ही रह जायेगा।

इस तरह पानी कहां से आया? ये प्रश्न सम्पूर्ण सृष्टि नामक पेड़ की एक शाखा का विश्लेषण होगा परन्तु पंच तत्व वो पृष्ठभूमि हैं जहां से ये सम्पूर्ण सृष्टि अथवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड बना है।

परन्तु क्या वैज्ञानिक केवल सृष्टि को समझना चाहते हैं? नहीं। वैज्ञानिक तो इस धारणा पर कार्य कर रहे हैं कि आज नहीं तो कल ये सौर मंडल नष्ट हो जाने वाला है। सूर्य में जब हाईड्रोजन के अणु समाप्त होने लगेगे अथवा उनकी पैदा की हुई शक्ति चूकने लगेगी तो फिर सूर्य में विस्फोट होगा और सम्पूर्ण सौर मंडल फिर आणविक बादलों में तब्दिल हो जायेगा और फिर वही प्रक्रिया दोहराई जायेगी जिसका जिक्र हम पहले कर चुके हैं अर्थात फिरसे सूर्य बनेगा और फिर से जीवन प्रकट होगा।

अब देखें, शास्त्र हमें बता चुके हैं कि समय के एक कल्प को ब्रह्मा का एक दिन कहा जाता है। जोकि ४२६४००००० वर्ष का होता है। अर्थात चार अरब, उन्नतीस करोड़, चालिस लाख और अस्सी हजार वर्ष। जिसमें १४ मन्वन्तर होते हैं जो इस कल्प के समय में बराबर बटें हुए होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग होते हैं जो इस मन्वन्तर के समय में बराबर बराबर बटें हुए होते हैं। एक महायुग के समय में सतयुग, द्वापरयुग, त्रेतायुग और कलियुग नामक चार जगप्रसिध्द युग समय के विभिन्न आयामों में बटें हुए होते हैं। कल्प के इस समय में ब्रह्मा सृष्टि का निर्माण करते हैं और जब कल्प का समय पुर्ण होता है तो प्रलय आती है और कल्प जितने ही समय के लिये सृष्टि समाप्त हो जाती है। इसे ब्रह्मा की रात कहते हैं परन्तु फिर ब्रह्मा का दिन होता है और फिर सृष्टि बनने लगती है। इस तरह ब्रह्मा के सौ वर्ष शास्त्र बताते हैं जिसके बाद ब्रह्मा की आयु पुर्ण हो जाती है और नारायण भगवान फिर एक नये ब्रह्मा को जन्म देते हैं और फिर सृष्टिचक्र आरंभ करने का आदेश देते हैं। ब्रह्मा की आयु के साथ ही ब्रह्माण्ड का अंत हो जाता जिसे हम आज देख रहे हैं उस अंतरिक्ष अथवा ब्रह्माण्ड को ब्रह्मा ने बनाया था तभी इसका नाम ब्रह्माण्ड है। क्योंकि ये ब्रह्मा का सृजन है इसलिये ब्रह्मा की आयु के साथ ही इसका भी अंत हो जाता है और हमारा सौर मंडल इसका एक अंग केवल है। जो ब्रह्माण्ड में किसी भी समुन्द्र के किनारे बिखरी रेत के एक कण के समान है।

देखें, यंहा वैज्ञानिक ये भी मानते हैं कि बिग बैन के साथ ही 'मैटर और एण्टी मैटर' बने थे। मैटर को एण्टी मैटर समाप्त करता जाता था परन्तु मैटर की संख्या अधिक होने से उसका अस्तित्व बना रहा और आहिस्ता आहिस्ता यही मैटर, अणुओं में तब्दिल होने लगा। जिससे बाद में ब्रह्माण्ड का वास्तविक रूप बना। अपने जन्म के साथ ही ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है और एक दिन जब इसका फैलना रुकेगा तो फिर सबकुछ समाप्त हो जायेगा फिर बिग बैन होगा और फिर मैटर तथा एण्टी मैटर बनेंगे और फिर ब्रह्माण्ड बनेगा। अप्रत्यक्ष रूप से वैज्ञानिक वही बात कहते हैं जो हजारों वर्ष पहले भारतीय संस्कृति में शास्त्र कह चुके हैं। ब्रह्मा के जन्म, मृत्यु और ब्रह्मा के दिन-रात वही बातें हैं जो वैज्ञानिक अप्रत्यक्ष रूप में कह रहे हैं।

दरअसल वैज्ञानिक इस चिंता में हैं कि सूर्य के समाप्त होजाने से पहले क्या मनुष्य जाति को बचाया जा सकता है? क्या ब्रह्माण्ड में पृथ्वी जैसा कोई दूसरा ग्रह है? जहां प्रलय से पहले मनुष्य जाति को ले जाया सके और इसके लिये वे अल्फा सैंटोरी नामक सूर्य की बात करते हैं। अल्फा सैंटोरी ब्रह्माण्ड में हमारे सौर मंडल के सबसे करीब का सितारा है। करीब का अर्थ है हमारे सौर मंडल से ४.४ प्रकाश वर्ष की दूरी पर। प्रकाश वर्ष अर्थात प्रकाश एक वर्ष में जितनी दूरी तय करता है उतने ४.४ वर्ष। प्रकाश वर्ष, सूर्य के प्रकाश की एक वर्ष में गति को कहा जाता है। ३००,००० (तीन लाख) किलोमीटर प्रति सैकेन्ड के हिसाब से ये गति मापी जाती है और यही सूर्य के प्रकाश की गति है। एक प्रकाश वर्ष का अर्थ है ९,५००,०००,०००,००० (पिचानवे खरब) किलोमीटर।